

विश्व पर्यावरण दिवस – वर्ष 2026

विश्व पर्यावरण दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकृति को समर्पित दुनियाभर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन और विकास का संकल्प लिया जाता है। यूनाइटेड नेशन्स इनवायरमेंट प्रोग्राम (UNEP) अर्थात् संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का शुभारम्भ 5 जून 1972 को केन्या के नैरोबी शहर में हुआ था। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने तथा प्रकृति की सुरक्षा हेतु आत्म चेतना जागृत करने के उद्देश्य से किया गया। इसी उद्देश्य के अन्तर्गत प्रति वर्ष 5 जून को “विश्व पर्यावरण दिवस” आयोजित किया जाता है।

सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण के प्रति जागृति लाने के लिये किये गये विशेष प्रयासों को देखते हुए ब्रह्माकुमारी संस्थान को UNEP में गैर सरकारी संगठन NGO के रूप में 2014 से पर्यवेक्षक का दर्जा प्राप्त है। ब्रह्माकुमारी संस्थान राजयोग एज्युकेशन एण्ड रीसर्च फाउण्डेशन का “कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग” इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का विशेष प्रयास कर रहा है। 1995 से इस प्रभाग द्वारा पर्यावरण की गुणवत्ता बढ़ाने, पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक कदम उठाने, पर्यावरण प्रदूषण के निवारण व नियन्त्रण हेतु जागृति के लिये राष्ट्रव्यापी प्रयास के रूप में विश्व पर्यावरण दिवस पर अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन हर वर्ष किया जाता है। जिनमें वृक्षारोपण, पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम (प्रदूषण विषय पर विशेष ध्यान देते हुए), स्वच्छता कार्यक्रम, पर्यावरण सुरक्षा के लिये कार्यशालायें, सेमीनार, Microgreens की जानकारी, गौ सेवा, रंगोली प्रतियोगिता, प्रदर्शनियाँ, सिंगल यूज प्लास्टिक प्रयोग कम करना, प्रतियोगितायें, वीडियो प्रस्तुतिकरण, पर्यावरण दिवस पर शान्ति यात्रायें, मानव श्रृंखला बनाना, पर्यावरण संरक्षण के लिये शाश्वत यौगिक खेती, मानसिक प्रदूषण के निदान से पर्यावरण प्रदूषण का समाधान, पर्यावरण को बचाने के लिये प्रतिज्ञायें कराना, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण कार्यकर्ताओं का सम्मान आदि शामिल है।

इस वर्ष का विषय (थीम):

Inspired by Nature, For Climate, For Our Future

विश्व पर्यावरण दिवस पर यह संदेश देते हैं कि प्रकृति केवल हमारी आवश्यकता नहीं, बल्कि हमारे जीवन और भविष्य का आधार है। प्रकृति का संरक्षण ही जलवायु परिवर्तन से निपटने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, हरा-भरा भविष्य सुनिश्चित करने की कुंजी है। प्रकृति हमें स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, भोजन और जीवन के लिए आवश्यक सभी संसाधन प्रदान करती है। आज पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन लगातार बिगड़ रहा है। बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाएँ

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव हैं आज बढ़ता प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और वनों की कटाई पूरी दुनिया के लिए गंभीर चुनौती बन चुके हैं। ऐसे समय में हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

पेड़-पौधे वातावरण को शुद्ध बनाकर पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रकृति हमें संतुलन, सह-अस्तित्व और सतत विकास का मार्ग दिखाती है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

हम ऐसी भविष्य की कल्पना करें जहाँ - स्वच्छ हवा, निर्मल पानी, घने जंगल और समृद्ध जैव-विविधता वाला एक संसार, जहाँ बच्चे बिना मास्क के खेल सकें, जहाँ नदियाँ फिर से शुद्ध हो और जहाँ प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में रहें। यह सपना साकार करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे।

अधिक से अधिक पेड़ लगाना और वनों की कटाई रोकना। प्लास्टिक का उपयोग कम करके पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं को अपनाना, पानी और बिजली की बचत करना, वर्षा जल संचयन, नदियों को स्वच्छ रखना और भूजल का संरक्षण तथा सौर और पवन ऊर्जा जैसी स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना है। सार्वजनिक परिवहन और साइकिल का उपयोग करके प्रदूषण कम किया जा सकता है। साथ ही, समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना भी बहुत आवश्यक है ताकि हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझ सके।

आइए, इस विश्व पर्यावरण दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि जलवायु की रक्षा करेंगे, हरे भरे वनों की रक्षा करेंगे, निर्मल नदियों की रक्षा करेंगे, स्वच्छ आकाश को संजोए, पेड़ लगाएंगे, पानी बचाएंगे, सौर ऊर्जा को अपनाएंगे और प्रकृति को सुरक्षित करते उज्ज्वल भविष्य के सपने को हम साकार करेंगे।

हमारी पृथ्वी हमारा भविष्य

पृथ्वी हमारी माता है, पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी पृथ्वी के बिना जीवनयापन असम्भव है क्योंकि जीवन की निरंतरता के लिये आवश्यक प्रत्येक महत्वपूर्ण संसाधन जैसेकि ऑक्सीजन, पानी, वायु इत्यादि केवल पृथ्वी पर ही उपलब्ध हैं। लेकिन आज मनुष्य की अनैतिकता के कारण पृथ्वी अपनी ही संरचना को नष्ट कर रही है। हमारे ही कर्मों ने आज पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों के जीवन को संकट में डाल दिया है। सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त विषाक्त वातावरण, वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग इत्यादि पर्यावरण के विषयों पर ध्यान देना अति आवश्यक हो गया है। पृथ्वी पर उपलब्ध स्वस्थ जीवन तथा मानव के अस्तित्व के लिये वर्तमान परिस्थितियाँ अत्यंत चुनौतीपूर्ण बन गई हैं इसलिये हमें पृथ्वी बचाने के लिये अपने अप्राकृतिक जीवन में शीघ्र बदलाव लाने की बहुत आवश्यकता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमें पूरे विश्व के लोगों में पृथ्वी पर उपलब्ध पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने की जरूरत है।

पर्यावरण और आध्यात्म

पर्यावरण और आध्यात्म का बहुत गहरा सम्बन्ध है। भारतीय संस्कृति पर्यावरण के साथ बहुत नज़दीकी से जुड़ी हुई है। हमारी जीवनशैली सदा ही पर्यावरण-मित्र शैली रही है, जो कि पर्यावरण संरक्षण का कार्य स्वतः करती है। परन्तु वर्तमान समय में हम प्रकृति से बहुत दूर चले गये हैं और प्रकृति तथा आध्यात्म का समन्वय भी बिगड़ गया है। जिसके फलस्वरूप प्रकृति के पांचों तत्वों का विध्वंसक रूप भी देखने को मिल रहा है। प्रकृति यह सन्देश दे रही है कि अब यह जागने का समय है। प्रकृति के साथ सम्बन्ध जोड़कर उसे देवतुल्य मानने की परम्परा आधुनिक युग में भी जीवित रखने की अति आवश्यकता है। भारत को पुनः विश्व का सिरमौर, सोने की चिड़िया का रूप देने के लिये हमें प्रतिबद्ध होना चाहिये। अतः अब हम सभी आध्यात्मिक भावनाओं से परिपूर्ण मानव जीवन, मूल्यनिष्ठ समाज और सुखदाई पर्यावरण का संकल्प लें।

आध्यात्मिकता हमें वास्तविकता की ओर ले जाकर प्रकृति और पुरुष (आत्मा) के गहरे सम्बन्ध का अनुभव कराती है। परे और आवरण से मिलकर पर्यावरण बनता है। आत्मा का आवरण यह पांच तत्वों का शरीर है। उसी प्रकार इस शरीर के पांचों तत्वों से परे प्रकृति के पांचों तत्वों का जो आवरण है उसे पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण में जल, धरती, पशु, पक्षी, जंगल और मानव सभ्यता सभी समाविष्ट है। स्वयं का सत्य ज्ञान ही प्रकृति के प्रति सद्भावना उत्पन्न करता है क्योंकि जब हम स्वयं को पवित्र बनाकर प्रकृति के प्रति उदारता, सहनशीलता और सहिष्णुता अपनाते हैं तो प्रकृति भी उसी अनुरूप अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। जितना आत्मा सतोप्रधान बनती जाती है उतना ही प्रकृति भी अपनी उन्नत अवस्था को प्राप्त करती है। भारतीय संस्कृति में हम प्रकृति की पूजा करते हैं और पर्यावरण का सन्तुलन बनाकर रखते हुए समस्त जीवराशियों को बचाने का प्रयास करते हैं।

योग का अर्थ है सम्बन्ध। हमें योगी जीवन अपनाकर अपने हृदय में प्रकृति के प्रति निश्छल प्रेम जगाने की आवश्यकता है और समस्त जीवराशियों से उस सम्बन्ध को जोड़ने की भी आवश्यकता है। आध्यात्मिकता प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेवारी को महसूस कराती है। प्रकृति के धर्म को निभाते हुए प्रदूषण मुक्त स्वर्णिम संसार को पुनः स्थापित करने की प्रेरणा आध्यात्मिकता ही देती है।

पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रतिज्ञायें

सम्पूर्ण मानवता का अस्तित्व केवल प्रकृति पर ही निर्भर है, इसलिये एक स्वस्थ एवं सुरक्षित पर्यावरण के बिना सुखमय मानव जीवन की कल्पना ही अधूरी है। ऐसे समय पर हम प्रकृति के लिये सद्भावना जगायेंगे। प्रकृति को बचाने के लिये हम सबको मिलकर कुछ विशेष और दृढ़ संकल्प लेना होगा।

- ★ पानी बचायेंगे, बिजली बचायेंगे।
- ★ भोजन बचायेंगे।
- ★ पेड़ लगायेंगे, पेड़ बचायेंगे।
- ★ गौ-सेवा करेंगे, पंछियों की सेवा करेंगे।
- ★ पेट्रोल बचायेंगे, गैस बचायेंगे।

- ★ अक्षय ऊर्जा का अधिक उपयोग करेंगे।
- ★ धरती को शक्तिशाली बनायेंगे।
- ★ जैवविविधता को बचायेंगे।
- ★ शाश्वत यौगिक खेती अपनाकर पर्यावरण की रक्षा करेंगे।
- ★ प्रदूषण रोकने में सहयोग देंगे।
- ★ प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करेंगे।
- ★ रिड्यूज-रियूज-रिसाइकल को अपना जीवन मन्त्र बनायेंगे।
- ★ वेस्ट को बेस्ट बनायेंगे।
- ★ हम अपनी आदतों में सुधार लायेंगे।
- ★ मन के संकल्पों और प्राकृतिक संसाधनों की बचत करेंगे।
- ★ स्वच्छ भारत बनायेंगे।
- ★ आत्म-निर्भर बनने में हम सम्भव प्रयास करेंगे।
- ★ भारतीय संस्कृति को बचायेंगे।
- ★ स्वर्णिम भारत बनायेंगे।

यौगिक गृह वाटिका

यौगिक गृह वाटिका योगी जीवन शैली का एक अनमोल हिस्सा है। यह वास्तव में घर की शान है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकता अनुसार प्रतिदिन उपयोग में आने वाले फल, साग-सब्जियों का उत्पादन स्वयं कर लेता है। गृह वाटिका में बैठकर प्रकृति की सेवा करते हुए तथा पौधों को फलते-फूलते देखकर उनसे जुड़े होने तथा उनके माध्यम से प्रकृति से जुड़े रहने का अहसास होता है।

गृह वाटिका से घर में हरियाली छा जाती है और जीवन में खुशहाली भी आती है। इससे अपने चिन्तन में भी सकारात्मक परिवर्तन आता है। प्रकृति को योग का दान देते हुए स्वयं द्वारा लगाये गये पौधों तथा वृक्षों को वृद्धि होते हुए देखकर नैसर्गिक रचनाकार होने के सुख की अनुभूति होती है। प्रकृति को अपने संवेदनाओं के अनुकूल प्रतिक्रियायें व्यक्त करते हुए देख मन उमंग से भर जाता है। पौधों को योग का दान देते हुए तथा उनकी देखभाल करने में हमें सन्तुष्टि मिलती है। प्रकृति के सानिध्य में रहने से हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है, इससे पर्यावरण प्रदूषण रोकथाम भी होती है।

प्राचीनकाल से घर-आंगन को हराभरा रखना यह हमारी सभ्यता है। आज मानव सभ्यता के विकास के साथ गृह वाटिकाओं का विकास करना बहुत जरूरी है। घर-आंगन एवं टेरेस पर सभी खाली जगहों का इससे सदुपयोग हो जाता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिये दैनिक आहार में पौष्टिक एवं सन्तुलित पोषण का होना बहुत जरूरी है। गृह वाटिका द्वारा प्राप्त ताजी व स्वच्छ फल, साग-सब्जियां इस सन्तुलन को बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। योगी आत्माओं के श्रेष्ठ संकल्पों के द्वारा उगाये जाने वाला अन्न, फल,

साग और सब्जियां हमारी योगयुक्त अवस्था का आधार बन सकते हैं। ये हमारे मन को शुद्ध करने की क्षमता रखते हैं।

गृह वाटिका से बच्चे स्वावलम्बी होना सीखते हैं तथा सम्पूर्ण परिवार में सहयोग की भावना का विकास होता है। गृह वाटिका में स्वयं द्वारा उगाये गये फल व सब्जियों का स्वाद एवं पोषक तत्व बाजार से खरीदे हुए फल व सब्जियों से सदा ही अच्छे होते हैं। इससे पारिवारिक व्यय की भी बचत होती है।

बढ़ती हुई आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। यह देखा जा रहा है कि समय के साथ-साथ लोग शाकाहारी बनते जा रहे हैं। इस कारण भविष्य में साग-सब्जियों की मांग बढ़ सकती है। ऐसे विकट समय में यौगिक गृह वाटिका आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ता एक कदम है।

शाश्वत यौगिक खेती द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा

- ★ सकारात्मक चिन्तन के द्वारा आत्मा और परमात्मा की शक्तियाँ पेड़, पौधों और वनस्पतियों में प्रदान करना।
- ★ पेड़-पौधों के साथ अपनी सन्तान जैसा व्यवहार करना।
- ★ पशु-पक्षियों को प्रकृति का सहयोगी मानकर उनकी रक्षा करना।
- ★ धरती को शक्तिशाली बनाने के लिये देशी पंचगव्य का प्रयोग करना।
- ★ जैविक यौगिक पद्धतियों को अपनाकर स्वस्थ धरा का निर्माण करना।

इससे समस्त जीवराशियों, वनस्पतियों एवं पांचों तत्वों को सतोप्रधान बनाने में मदद मिलती है। हमें यह पता होना चाहिये कि प्लास्टिक मल्लिग कर फसलों के अवशेषों को जलाने से प्रदूषण में वृद्धि होती है। यौगिक खेती पद्धति को अपनाकर फसलों के अवशेषों को मल्लिग द्वारा प्रदूषण से बचाने का प्रयास किया जा रहा है। किसानों को जल संरक्षण तथा प्राकृतिक व रसायन मुक्त शाश्वत यौगिक खेती के अनुभव तरीके सिखाये जा रहे हैं। हजारों किसान इस खेती पद्धति को अपनाकर पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम में अपनी अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

जल जन अभियान

“जल है तो हमारा भविष्य है”। जल प्रकृति द्वारा मनुष्य को दी गई महत्वपूर्ण सम्पत्तियों में से एक है। बिना जल के जीवन की कल्पना संभव नहीं है। जल की कमी धीरे-धीरे बढ़कर एक गम्भीर समस्या का रूप लेती जा रही है। जनसंख्या विस्फोट, बढ़ता प्रदूषण, अंधाधुंध औद्योगीकरण, निरंतर गिरता भू-जल का स्तर, वृक्षों का कटाव तथा पानी की बर्बादी आज सबसे बड़ी समस्याएँ हैं। भारत में हजारों कुएँ, जल-कूप, तालाब आदि सूख चुके हैं। कहीं लोग पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं। प्रदूषित पानी के उपयोग से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। वर्तमान समय में भारत तथा विश्वभर में गहराये जल संकट के प्रति जन-जागरूकता लाने की अत्याधिक आवश्यकता है। ऐसे समय पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने जल जन अभियान के माध्यम से करोड़ों लोगों को जागरूक करने तथा देश के हर नागरिक को अपनी नैतिक जिम्मेवारी का अह-सास कराने का संकल्प लिया है।

भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय तथा ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के द्वारा संयुक्त रूप से संचालित राष्ट्र-व्यापी जल जन अभियान, जल संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक पहल है जिस शुभारम्भ 16 फरवरी 2023 को ब्रह्माकुमारीज़ के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय शान्तिवन परिसर, आबू रोड, राजस्थान में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा वर्चुअल रूप से किया गया।

चूँकि कृषि कार्य में सबसे अधिक बर्बाद जल ही हो रहा है, इसलिये किसानों एवं ग्रामीणों की सेवा के लिये समर्पित ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा जल जन अभियान को गंभीरता से लिया गया है। प्रभाग ने ग्रामीणों के लिये जल संरक्षण हेतु खेत का पानी खेत में गांव का पानी गांव में तथा शहरी क्षेत्रों के लिये जल संरक्षण-जीवन संरक्षण यह सूत्र वाक्य दिया है। इस अभियान के माध्यम से देश में किसानों, ग्रामीणों तथा आम जनमानस को जल संरक्षण के प्रति जागृत करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्हें जल संरक्षण के लिये प्राकृतिक खेती पद्धति शाश्वत यौगिक कृषि अपनाने, मोटे अनाजों की फसलें लेने, कुएं, तालाब, पोखरों का संरक्षण करने तथा उनका पुनर्भरण करने, वर्षा जल संचय करने, वृक्षारोपण करने, हल्की सिंचाई के महत्व और उसकी विधि के बारे में जानकारी देने इत्यादि के साथ जल संरक्षण हेतु शपथ दिलाने का कार्य भी अभियान के अंतर्गत किया जायेगा।

Beat Plastic Pollution

प्लास्टिक प्रदूषण से लड़ना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत है, आइए इस अभियान से जुड़े और सिंगल यूज प्लास्टिक का बहिष्कार कर पर्यावरण को बचाएं। अकेले भारत ही लगभग 1.50 करोड़ टन प्रति वर्ष प्लास्टिक कचरा उत्पन्न कर रहा है, जिसमें 10% भी recycle नहीं हो पाता है। आज हम ऐसे व्यापक जन-आंदोलन अभियान की शुरुआत करें और प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर एक कदम बढ़ाएं। हम सभी मिलकर प्रदूषण से मुक्त जीवनशैली अपनाएं और प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें। अब समय आ गया है कि दुनिया को Single Use प्लास्टिक के इस्तेमाल को अलविदा कहने का। आप जानते हैं कि प्लास्टिक बायोडेग्रेडेबल पदार्थ नहीं है, यह न मिट्टी में मिलता है, न पानी में घुलता है और जलाने पर इसका प्रभाव और भी बुरा है, प्लास्टिक के इस्तेमाल से हाने वाली समस्याएँ निरंतर गंभीर होती जा रही हैं।

आज प्लास्टिक जलीय जीवों व पशुओं की मौत का कारण बन रहा है और कैंसर जैसी घातक बीमारियों का कारण बन रहा है। अपनी आदतों में मामूली बदलाव करके हम पर्यावरण, भूमि की उर्वरा शक्ति, पेयजल की गुणवत्ता एवं गायों के संरक्षण में अहम योगदान दे सकते हैं इसलिए कपड़े का बैग इस्तेमाल करें और पर्यावरण को सुरक्षित रखें।

हमेशा साथ में लें कपड़े का थैला,
प्लास्टिक थैले से न करें देश को मैला।

समृद्ध भविष्य के लिए है जरूरी,
सिंगल यूज प्लास्टिक से बनाएं अब दूरी।

Microgreens

माइक्रोग्रीन्स स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। माइक्रोग्रीन्स को “सुपरफूड ऑफ द फ्यूचर” कहा जाता है क्योंकि ये बहुत कम समय और संसाधन में अधिकतम पोषण देते हैं। यह पोषण की कमी दूर करने का सबसे आसान और स्वादिष्ट तरीका है। ये कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने, पाचन तंत्र को सुधारने तथा आँखों, त्वचा और हड्डियों को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं। इनमें Vitamin C और एंटीऑक्सीडेंट्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो इम्यूनिटी बढ़ाने में मदद करते हैं। साथ ही, ये शरीर में सूजन कम करने, वजन नियंत्रण और Detoxification में भी मदद करते हैं। माइक्रोग्रीन्स को घर पर बहुत आसानी से उगाया जा सकता है क्योंकि इन्हें कम जगह, जैसे बालकनी, किचन विंडो या ट्रे में उगाया जा सकता है। ये केवल -10 दिनों में तैयार हो जाते हैं, इनमें कम पानी की आवश्यकता होती है और कीटनाशकों की जरूरत नहीं पड़ती। इन्हें साल भर किसी भी मौसम में उगाया जा सकता है। खाने में भी माइक्रोग्रीन्स स्वाद और सुंदरता बढ़ाते हैं तथा सलाद, सैंडविच, सूप, जूस और विभिन्न डिशों में उपयोग किए जाते हैं।

एक पेड़ माँ के नाम:

भारतीय संस्कृति में धरती को माँ माना गया है, जब हम एक पेड़ लगाते हैं तो सिर्फ जड़े नहीं गाड़ते बल्कि हम संस्कृति, कर्तव्य और भविष्य को भी रोपते हैं। माता एवं प्रकृति निःस्वार्थ प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। माँ जीवन देती हैं और पेड़ जीवन को संजोते हैं। यह धरती माँ के प्रेम, आदर, सम्मान, कर्तव्य और निष्ठा का अभियान है। मातृशक्ति और प्रकृति के संवर्धन के उद्देश्य से जन्मधारी माँ के सम्मान में लगाया हर पेड़ एक आशीर्वाद है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ मातृशक्ति को समर्पित एक अनूठा प्रयास है। इस अभियान में महिलाओं के द्वारा विशेष पौधारोपण किया जाए। यह पुनीत पहल, मातृत्व भावना को जगाने के लिए समर्पित है। यह पूरे देश की महिलाओं को हरियाली भरे भविष्य की ओर बढ़ाने के लिए सशक्त बनायेगी। आप इस अभियान का हिस्सा बनें।

आइये, एक कदम बढ़ाइये और एक पेड़ माँ के नाम लगाइये।

प्रकृति को हरा भरा बनाना है, एक पेड़ माँ के नाम लगाना है।

वृक्षारोपण:

मानव जीवन का अस्तित्व वृक्षों पर निर्भर है। मनुष्य को जीवित रहने के लिये ऑक्सीजन तथा पानी की अति आवश्यकता है। वनस्पति ही ऑक्सीजन का प्राकृतिक स्रोत है। पेड़ पौधे पर्यावरण में ऑक्सीजन छोड़ते हैं जिसे हम श्वसन के लिये उपयोग करते हैं। हमारे जीवन के लिये ऑक्सीजन अति आवश्यक है। इसके बिना जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है, इसलिये इसे प्राण वायु कहा जाता है। वैश्विक महामारी की

दूसरी लहर में ऑक्सीजन के अभाव के कारण टूटती सांसों ने लोगों को वृक्षारोपण एवं वृक्षों के संरक्षण के महत्व को समझा दिया है। हमारे वातावरण में प्राणवायु का स्तर सामान्य बना रहे, इसके लिये पेड़ पौधों का संरक्षण अति आवश्यक है। लगातार काटे जा रहे वृक्षों के कारण पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। अन्धाधुन्ध पेड़ों की कटाई के कारण बरसात एवं पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। पीपल, बरगद जैसे देव-वृक्ष जो सैकड़ों साल जीवित रहते थे, उनकी कमी के कारण कार्बोन्डाईक्साइड की वृद्धि हुई। जिसके परिणाम स्वरूप वैश्विक तापमान बढ़ने ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई, जो प्रकृति को विनाश की ओर अग्रसर कर रही है। ऐसी अनेक समस्याओं का समाधान केवल वृक्षारोपण में है। पर्यावरण का सन्तुलन बनाये रखने का यह प्रमुख कदम है। भारत में तो काटे जाने वाले प्रत्येक के बदले में पांच पेड़ लगाये जाने की परम्परा हमारी संस्कृति का एक हिस्सा रही है। हमारे देश में घरों के आंगन में तुलसी लगाने की पुरानी परम्परा रही है। ऐसी संस्कृति को हमें जीवित रखना है।

वृक्षारोपण के नारे

- ★ बंजर धरती करे पुकार, पेड़ लगाकर करो श्रृंगार
- ★ अगर पेड़-पौधे करोगे नष्ट, सांस लेने में होगा कष्ट
- ★ पेड़ों की जब करोगे रक्षा, तभी होगी जीवन सुरक्षा
- ★ आज से हमने ठाना है, घर- घर पेड़ लगाना है
- ★ घर-घर में पेड़ लगाओ, धरती को स्वर्ग बनाओ
- ★ पेड़ लगाये हर इन्सान, माँ वसुंधरा देगी वरदान

वृक्षारोपण के स्लोगन

- ★ वृक्षों से हरियाली, जीवन में खुशहाली
- ★ जहाँ है हरियाली, वहीं है खुशहाली
- ★ वृक्ष लगाओ, धरती को बचाओ
- ★ पेड़ लगायें, जीवन बचायें
- ★ धरती पर स्वर्ग है वहाँ, हरे-भरे वृक्ष है जहाँ
- ★ पेड़ों से मिलती है वायु, वायु से मिलती है आयु
- ★ वृक्षारोपण है प्रकृति मान, पेड़ लगाकर करे इसका सम्मान
- ★ अब मान चुकी है दुनिया सारी, पेड़ बचाने की जिम्मेदारी हमारी
- ★ हाथों से आपस में हाथ मिलायें, ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायें
- ★ पेड़ है प्रकृति की शान, वृक्षारोपण का चलाओ अभियान
- ★ पर्यावरण है हमारा सच्चा मित्र, बिगड़ने न देंगे हम इसका चित्र
- ★ पेड़ लगाने का करो दृढ़ संकल्प, सृष्टि को बचाने का यही विकल्प
- ★ पेड़ों की मत काटो भाई, यही करते प्रकृति की भरपाई

- ★ कड़ी धूप में जलते हैं पाँव, होते पेड़ तो मिलती छाँव
- ★ वन-उपवन करे पुकार, देते हमें वर्षा की बौछार
- ★ वृक्ष प्रदूषण का विष पी जाते, पर्यावरण को ये स्वच्छ बनाते
- ★ आओ बच्चों के साथ मनाये त्यौहार, स्वस्थ जीवन के लिये दें एक पेड़ उपहार

वृक्षारोपण के समय पौधे को संकल्प दे

आज इस सृष्टि में आपका नया जन्म हुआ है, आप विश्व कल्याणकारी परमात्मा के सन्तान हो। आपको अपना स्वास्थ्य विकास करना है, हर कठिन परिस्थितियों में भी आपको खड़े रहना है, विश्व कल्याणकारी बनकर सबको सुख देना है। फल-फूल, ऑक्सीजन देना है, छाँव देना है, अनेकों जीवराशियों का आश्रय स्थान बनना है, पूरे विश्व को आपका योगदान जरूरी है। अपने नयनों द्वारा परमात्मा की शक्ति तथा वायब्रे-शन्स उप पेड़ में प्रवाहित होते हुए महसूस करें। इस तरह बात करके हाथ फेर कर कहे कि इस सृष्टि को सुन्दर बनाने में आपकी अहम् भूमिका है।

पर्यावरण संरक्षण के नारे

- ★ साथी हाथ बढ़ायेंगे, पर्यावरण को स्वच्छ बनायेंगे।
- ★ पर्यावरण का रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान।
- ★ हम सब मिलकर प्रण करेंगे, घर आंगन को स्वच्छ करेंगे।
- ★ आपस में हम मदद करेंगे, गली-मोहल्ले साफ रखेंगे।
- ★ यौगिक गृह वाटिका बनायेंगे, घर-घर में स्वर्ग लायेंगे।
- ★ प्रकृति का न करें हरण, आओ बचायें पर्यावरण।
- ★ बंजर धरती करे पुकार, यौगिक खेती का सपना हो साकार।

पर्यावरण का स्लोगन

- ★ स्वच्छता में प्रभुता है।
- ★ स्वच्छ पर्यावरण सुख-शान्ति का आधार, वृक्ष लगाकर करो इसका श्रृंगार।
- ★ जीवन में होगी खुशहाली, प्रकृति की करो रखवाली।